International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-05-2025, Accepted: 12-06-2025, Published: 28-06-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 94-96

पंत के काव्य में प्रकृति का जीवंत एवं भव्य चित्रण

डॉ. निधि शर्मा
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग, राजकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय नगरोटा बगवां जिला काँगड़ा हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश
अनादिकाल से ही मानव प्रकृति के प्रति संवेदनशील रहा है। शारीरिक, आध्यात्मिक एवं मानसिक तीनों दृष्टियों से प्रकृति मनुष्य का पोषण करती हुई उसके विकास में सदैव सहायक बनी है। मनुष्य मन और काव्य के मध्य प्रकृति संयोजक की भूमिका निभाती है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सशक्त लेखक एवं महान कवि सुमित्रानंदन पंत का कविता–काल प्रकृति चित्रण से ही प्रारंभ हुआ। इनके काव्य में नवीनता, मौलिकता के साथ–साथ विविधता के दर्शन भी होते हैं। इन्होंने प्रकृति–सौंदर्य एवं मानव मन की भावनाओं, आशाओं, आकांक्षाओं को अपने काव्य में वर्णित किया है। इनकी जन्म स्थली कसौनी ग्राम (जिला अल्मोड़ा, उत्तरप्रदेश) अपनी मनोहारी प्राकृतिक छटा के लिए सुप्रसिद्ध रही है। बाल्यावस्था से ही सुमित्रानंदन पंत प्रकृति की ओर आकृष्ट रहे जिसका स्पष्ट प्रभाव उनके व्यक्तित्व में झलकता है। कवि पंत ने प्रकृति के मनोहारी दृश्यों एवं रूपों का सरस चित्रण अपने काव्य में किया है।

मूल शब्दः प्रकृति, संवेदनशील, सरसता, नवीन, धात्री, अनुरागमयी, एकाकार।

प्रकृति के अदभुत चितेरे सुमित्रानंदन पंत को शैशवावस्था से ही प्रकृति का जो प्रेम, दुलार, साहचर्य प्राप्त हुआ उसकी अमिट छाप जीवन पर्यन्त इनके हृदय पर अंकित हो गई। "प्रकृति तथा मानव–जीवन में समाहित निसर्ग सौंदर्य के प्रति सहज आकर्षण की ललक पशुओं की तरह मनुष्य में भी एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। पर्वत, नदी, बादल, समुद्र, वनस्पति, रंग, नक्षत्र, चांद, ध्वनि आदि इन प्राकृतिक उपकरणों के प्रति सहज अनुराग तथा मानवीय जगत में पुरुष की नारी के प्रति एवं नारी की पुरुष के प्रति आसक्ति, यौवन, शैशव एवं समवयस्कता के प्रति प्रेम भाव इत्यादि ये सांवेगिक भावनाएं जन्मजात प्रवृत्तियां हैं।"[1]

प्रकृति–दर्शन से पंत को यह जो नया आलोक मिला उसने सामान्य रूप से उनकी संपूर्ण जीवन दृष्टि को बदल दिया। पंत जी लिखते हैं– "बाहर हिमालय के ऊंचे, स्वच्छ शिखरों पर तथा चीड़, बांस और देवदारु की हरी– भरी घनी बनालियों में छायी मौन–मनोरम पहाड़ी सांझ,अपनी सुनहली छायाओं के निष्कंप पंख सिमटाए हुए, अवाक् होकर, जैसे उस एकांत कविता पाठ को मेरे मन की अज्ञात गहराइयों में उड़ेलती रहती थी और मैं तल्लीन एवं आत्म–विस्मृत होकर किवाड़ों की ओट में खड़ा, उस प्रणय निवेदन से भरी मधुर छंद–ध्वनि का पान करता था। धीरे–धीरे मैं भी जैसे उन्हीं छंद ध्वनियों की आत्माओं से प्रेरित होकर शब्दों की मालाएं पिरोने लगा।"[2]

इन्हें प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता का अनुभव नूतन जीवन–दृष्टि के समान प्रतीत हुआ। इन्होंने प्रकृति के विषय में नवीन और सूक्ष्म सौंदर्य–बोध का परिचय दिया है। पंत और प्रकृति के नवीन संबंध से इस नवीन सौंदर्य–बोध की उत्पत्ति हुई है।

"छायावाद के प्रवर्तन के साथ प्रकृति इतनी तेजी से काव्य जगत पर छा गई कि उसने और सब कुछ तिरोहित कर दिया। कवियों ने प्रकृति को छोड़कर और कुछ देखना ही उचित न समझा। कवि ने प्रकृति के बाह्य रूप तक ही अपने को सीमित नहीं रखा किन्तु उसके अंतराल में प्रवेश कर उसकी सुख–दुख, हर्ष–विषाद की सहचरी पाया; उसे अपने सारे क्रिया कलाप प्रकृति के विस्तृत प्रांगण में दृष्टिगत हुए और वह एक कवि को ऐसा झरोखा प्रतीत हुई जो एक ओर उसे अध्यात्म सत्ता की ओर ले जाता था और दूसरी ओर उससे छनकर मानव मात्र की एकता का प्रकाश भी आता था। इस दिशा में मुकुटधर शर्मा पांडेय, प्रसाद, निराला, महादेवी प्रभृति समस्त छायावादी कवियों ने अपनी मूल वाणी को प्रवृत्त किया है किन्तु पंत जी सबसे पृथक् तथा सबसे मूर्धन्य होकर विराजमान हैं। कारण यह है कि अन्य कवि प्रकृति को माध्यम बनाकर चलते हैं जिसमें प्रकृति का वैयक्तिक स्वातंत्र्य समाप्त हो जाता है पर पंत की कविता में प्रकृति ही मन और प्राण बनकर आई है।"[3]

यह कहना अनुचित न होगा कि प्रकृति और पंत दोनों एकाकार हो गए हैं प्रकृति में कवि तथा कवि में प्रकृति के रूप वैभव के दर्शन इनके काव्य में देखे जा सकते हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि कवि ने प्रकृति को धात्री माना है। निम्न पंक्तियां द्रष्टव्य हैं

"प्रातः काल शिशु पंत को प्राणों का वरदान देकर उसकी मां सरस्वती सदैव के लिए इस संसार से विदा हो गई। मां के इस अभाव को प्रकृति की गोद ने दुलार कर पूरा किया। पंत के लिए प्रकृति ही धात्री बन गई ––जिसने अपना विशाल स्नेहिल हृदय

बालक को अर्पित कर दिया।
श्मां से बढ़कर रही धात्री, तू बचपन में मेरे हित।
धात्री कथा रूपक भर:तूने–किया जनक बन– पोषण
मातृहीन बालक के सिर पर वरद्हस्त घर गोपन।'

धात्री–प्रकृति ने बालक को सौंदर्यमयी– अनुरागमयी गोदी में झुलाकर चकित कर दिया। पंत जी की कविता में प्रकृति –सौंदर्य दर्शन का विकास इसी प्रकृति–अनुराग की सजीव गाथा है।"[4]

सुमित्रानंदन पंत ने अपने काव्य में प्रकृति को मां, सहचरी, प्रेयसी, सखी आदि के रूप में भी चित्रित किया है। प्रकृति प्रेमी कवि पंत प्रकृति को सखी की तरह चित्रित करते हुए लिखते हैं –

"हां सखी, आओ बांह खोल– हम
लगकर गले जुड़ालें प्राण
फिर तुम तम में मैं प्रियतम में
हो जावें द्रुत–अंतर्धान।"[5]

प्रकृति के अनोखे क्रियाकलापों से ही इनकी हृदयस्थ भावनाएं भय, विस्मय, प्रेम आदि स्फुरित हुईं। कवि पंत ने स्वयं स्वीकारा है कि उन्हें काव्य–रचना की प्रेरणा प्रकृति से ही मिली है। पंत ने अपने काव्य में प्राकृतिक सौंदर्य की अदभुत छटा का चित्रण बड़ी

सरसता के साथ किया है। डॉ०गणपति चंद्रगुप्त जी लिखते हैं– "विश्व के न जाने कितने ही कवियों ने प्रकृति का चित्रण अपने काव्य में किया है किंतु प्रकृति के प्रति जैसा गहरा अनुराग इस महाकवि में परिलक्षित हुआ वैसा हमें किसी अन्य में दृष्टिगोचर नहीं होता प्रकृति उनके लिए काव्य की वस्तु और साज सजा का साधन ही नहीं अपितु उनकी काव्य प्रेरणा का स्रोत भी रही है। प्रकृति की यह प्रेरणा कवि के लिए क्षणिक नहीं रही है अपितु वह उनके कवि जीवन का अंग बन गई है। कूर्मांचल प्रदेश के उस सश्य श्यामल वातावरण से दूर उन्हें वर्षों बीत गए किंतु उससे उनके प्रकृति प्रेम में कोई बाधा उपस्थित नहीं हुई इतना अवश्य है कि परिस्थितियों और समय के अनुसार उनके प्रकृति प्रेम संबंधी दृष्टिकोण में थोड़ा बहुत परिवर्तन होता रहा है।"[6]

कवि पंत के प्रकृति–प्रेम का इससे बढ़कर प्रमाण और क्या हो सकता है कि उन्होंने प्राकृतिक सौंदर्य के सामने सुंदर नारी के मन को मोहने वाले रूप सौंदर्य को भी नकार दिया

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया।
बाले, तेरे बाल–जाल में कैसे उलझा दूं लोचन?"[7]

सभी छायावादी कवियों में प्रकृति के प्रति निश्छल प्रेम संबंध एवं पूर्ण आत्मसमर्पण कवि पंत में ही दृष्टिगत होता है। प्रकृति के मनोरम दृश्यों से अभिभूत हो इन्होंने कल्पना की उड़ान भरी है। 'बादल' को विविध मनोहारी रूपों में चित्रित करते हुए वे लिखते हैं–

"फिर परियों के बच्चे से हम सुभग सीप के पंख पसार।
समुद पैरते शुचि ज्योत्स्ना में पकड़ इंदु के कर सुकुमार।"[8]

सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में आदर्शवादिता एवं प्रकृति प्रेम का अनोखा सामंजस्य देखने को मिलता है। निम्न उदाहरण प्रस्तुत है

"कुमुद कला बन कल हासिनी!
अमृत प्रकाशिनि,नभ वासिनि,
तेरी आभा को पा कर मां!
जग का तिमिर–त्रास हर दूंकृ
नीरव रजनी में निर्भय।"[9]

कवि पंत ने एक जिज्ञासु की भांति अपने परिवेश को निहारा है। वे प्रकृति–सौंदर्य के रचनाकार हैं। इन्होंने बड़ी तल्लीनता, आत्मीयता एवं प्रफुल्लित मन से अपनी रचनाओं में प्रकृति का वर्णन किया है।

"पंत प्रकृति के कोमल दृश्यों के कुशल चित्रकार हैं, उनके काव्य–व्यक्तित्व में उत्तरोत्तर विकास मिलता है। 'पल्लव' के प्रकृति प्रेमी पंत 'युगवाणी' और 'ग्राम्या' में सामाजिक यथार्थ का चित्रण करते हैं; 'स्वर्णधूलि' और 'स्वर्णकिरण' में सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विषयों की ओर उन्मुख होते हैं और 'कला और बूढ़ा चांद' में भी नए प्रयोगों की अभिव्यक्ति करते हैं।"[10]

सुमित्रानंदन पंत ने अपने काव्य में प्रकृति का वर्णन विविध रूपों में किया है। उनके काव्य में प्रकृति कहीं विषय रूप में उपस्थित हुई है, तो कहीं विषय को उद्दीप्त करने वाली है। कहीं प्रकृति रहस्य का विषय बनी है, तो कहीं मानवीकृत रूप में आई है। कहीं प्रकृति प्रतीक रूप में प्रस्तुत हुई है, तो कहीं विषय तक पहुंचने का साधन बनी है और कहीं अलंकार योजना के लिए प्रकृति का उपयोग हुआ है।

कवि पंत ने प्रकृति का स्वतंत्र रूप में चित्रण किया है वे प्रकृति का आलंबन रूप में चित्रण करते हुए लिखते हैं

"नव वसंत की रूप–राशि का ऋतु उत्सव यह– उपवन
सोच रहा हूं जन जग से क्या सचमुच लगता– शोभन
रंग रंग के खिले फलाक्स,वरवीना छपे डियाथस,
नत दृग ऐंटिडिनम, तितली सी पेंजी पापी– पालस,
हंसमुख कटीटफ्ट,रेशमी चटकीले नशटरशम,
खिली स्वीट पी–एडंडंस,फिल बास्केट औ'ब्लू बैटम।"[11]

सुमित्रानंदन पंत ने मानव मन के भावों को उद्दीप्त करने के लिए प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण किया है

"कब से विलोकती तुमको,ऊषा के वातायन से।
संध्या उदास फिर जाती,सूने गृह के आंगन से।।
लहरें अधीर सरसी में, तुमको ताकती उठ उठ– कर।
सौरभ समीर रह जाता, प्रेयसी! ठंडी सांसे भर– कर!!"[12]

प्रकृति प्रेमी कवि पंत प्रकृति का प्रतीकात्मक रूप में चित्रण करते हुए लिखते हैं –

"साड़ी–सी सिकुड़न–सी जिस पर,
शशि की रेशमी विभा से भर
फैले हैं वर्तुल मृदुल लहर
फैले फूले जल में फेनिल।"[13]

पंत ने प्रकृति में एक अदभुत सौंदर्य की झलक पाई है। इसी कारण अपनी रचनाओं में उन्होंने मानवीय सौंदर्य को अभिव्यक्ति देने के लिए विभिन्न प्राकृतिक उपादानों का चयन किया है। प्रकृति का मानवीकरण करते हुए कवि लिखते हैं–

"सैकत शैय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा– ग्रीष्म विरल,
लेटी श्रांत क्लांत निश्चल।
तापस–बाला–सी गंगा कल,शशिमुख से दीपित– मृदु करतल,
लहरें उर–पर कोमल कुंतल।"[14]

पंत के प्रकृति चित्रण की एक विशेषता रहस्यात्मक संकेत है। प्राकृतिक सुषमा से अभिभूत होकर पंत के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। इनकी रहस्य भावना प्रायः स्वाभाविक ही रही। पंत कवि संसार के नाना रूपों और व्यापारों में अज्ञात चेतन सत्ता का अनुभव कर उसे अपनी कविता में अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं

"प्रथम रश्मि का आना रंगिणि!तूने कैसे पहचाना?
कहां–कहां हे बालविहंगिनि! पाया तूने यह गाना ?
निराकार तम मानो सहसा ज्योतिपुंज में हो साकार।
बदल गया द्रुत जगज्जाल में धरकर नाम रूप नाना।
खुले पलक, सुवर्ण छवि खिली सुरभि डोले मधुबाल।
स्पंदन, कंपन, नव जीवन फिर सीखा जग ने अपनाना।"[15]

प्रकृति प्रेमी कवि पंत ने अलंकार योजना के लिए प्रकृति का सर्वाधिक उपयोग अपने काव्य में किया है।दो उदाहरण प्रस्तुत हैं

"बताऊं मैं कैसे सुंदर ?
एक हूं मैं तुमसे सब भांति ?
जलद हूं मैं यदि तुम हो स्वाति
तृषा तुम यदि मैं चातक पांति।"[16]

"अरुण कलियों से कोमल घाव
कभी खुल पड़ते हैं असहाय।"[17]

निष्कर्ष

कवि पंत का काव्य असीम सौंदर्य–संपदा से परिपूर्ण है। पंत के काव्य में प्रकृति का उपयोग अनेक रूपों में होता है, उनके काव्य में प्रकृति कहीं स्वयं विषय बनती है और कहीं विषय तक पहुंचने का साधन। प्रकृति के जड़–पदार्थों– पहाड़, नदी, बादल आदि में भी इस महान कवि ने अपनी मानवीय चेतना का अनुभव किया है। प्रकृति का साहचर्य पा कर सुमित्रानंदन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उमंग से भर उठे। पंत की कविताएं अपनी आत्मीयता के कारण पाठक वर्ग को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती हैं। अभिव्यक्ति की स्वाभाविक परिणति इनकी रचनाओं में मिलती है। प्रकृति ने कवि पंत के मन में कल्पना के पंख लगा दिए और वे खुले आकाश में एक मुक्त पंछी की तरह उड़ने लगे। इन्होंने प्रकृति के परिचित दृश्यों को नया रूप प्रदान किया और बहुत से अपरिचित दृश्यों को भी दृष्टिगोचर किया। प्रकृति का जीवंत एवं भव्य चित्रण इनकी रचनाओं में मिलता है। महान कवि सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति के सार्वभौम रूप से प्रभावित हो कर अपना काव्य रचा। इनका काव्य चिंतन एक नवीन दिशा का प्रवर्तन करता है।

संदर्भ सूची

1. विजयदान देथा : साहित्य और समाज, पृ०92, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सं०2017 ।
2. सुमित्रानंदन पंत : शिल्प और दर्शन, पृ०220, राम नारायण लाल बेनी माधव, इलाहाबाद, सं०1961 ।
3. डॉ० शांतिस्व:प गुप्त : साहित्यिक निबंध, पृ०583, 584, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, सं०1974 ।
4. कृष्णदत्त पालीवाल : भारतीय साहित्य के निर्माता सुमित्रानंदन पंत, पृ०15, साहित्य अकादेमी, दिल्ली, प्र०सं०1985 ।
5. नामवर सिंह : छायावाद, पृ०40, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, सं०2022 ।
6. गणपति चंद्र गुप्त : साहित्यिक निबंध, पृ०740,लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं०1999 ।
7. वही, पृ०578 ।
8. रामचंद्र शुक्ल : हिंदी साहित्य का इतिहास, (भूमिका– रामस्वरूप चतुर्वेदी) पृ०477, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं०2014 ।
9. डॉ०नगेन्द्र, डॉ०हरदयाल (सं०) : हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ०536, मयूर पेपर बैक्स, इंदिरापुरम, सं०2018
10. डॉ० भोलाशंकर व्यास : भारतीय साहित्य की रूपरेखा, पृ०125, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, सं०2008 ।
11. गणपति चंद्रगुप्त:साहित्यिक निबंध, पृ०742 ।
12. वहीं, पृ०743 ।
13. कृष्णदत्त पालीवाल : भारतीय साहित्य के निर्माता सुमित्रानंदन पंत, पृ०42 ।
14. शांतिस्वरूप गुप्त:साहित्यिक निबंध, पृ०411 ।
15. आचार्य रामचंद्र शुक्ल : हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ०470, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं०1981 ।
16. डॉ०शांति स्वरूप गुप्त : साहित्यिक निबंध पृ०591 ।
17. वही ।